पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/24-26 प्रकाशित 01.06.2026 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

दानदाताओं से अपील

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों में सहयोग करने हेतु **खाता संख्या 10205148690 स्टेट बैंक आफ इण्डिया,** घन्टाघर, दिल्ली– 110007, **आई. एफ. एस. कोड** SBIN0001280 पर सीधे भेज कर हमें फोन न. **9810117464** पर एस.एम.एस कर दें या **9868051444** पर googlepay कर दें।

–अनिल आर्य

वर्ष-43 अंक-01 ज्येष्ठ-2083 दयानन्दाब्द 202 01 जून से 15 जून 2026 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.

प्रकाशित: 01.06.2026, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

॥ओ३म्॥ स्थापित 3 जून1978

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के
48वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में
डॉ. अमिता चौहान व डॉ. अशोक कु. चौहान के सानिध्य में
विशाल आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर

भव्य उद्घाटन समारोह

रविवार, 31 मई 2026, प्रातः 11 बजे से 1.00 बजे तक
स्थान : ऐमिटी इन्टरनेशनल स्कूल, सैक्टर-44, नोएडा
(निकट मैट्रो स्टेशन बोटोनिकल गार्डन)

कार्यक्रम

मुख्य अतिथि : डॉ. सत्यपाल सिंह जी (पूर्व पुलिस कमिश्नर व पूर्व केन्द्रीय मंत्री)
अध्यक्षता : श्री आनन्द चौहान जी (निदेशक, ऐमिटी शिक्षण संस्थान)
मुख्य वक्ता : डॉ. जयेन्द्र आचार्य व आचार्य गवेन्द्र शास्त्री
मधुर भजन : श्रीमती पिंकी आर्या व श्री प्रवीन आर्य (गाजियाबाद)

विशिष्ट अतिथि :
श्री अजय चौहान, राजीव कुमार परम, अरुण अग्रवाल, सुरेन्द्र गम्भीर
श्री एस.के. अजमानी, मे.जन.आर.के.एस. भाटिया, कृष्णा पाहुजा

विशिष्ट अतिथि : आचार्य गायत्री मीना, कर्नल करण खर्ब (प्रधान, आर्य समाज अरूण विहार नोएडा)
श्रीमती मधु भसीन (प्रधान, आर्य समाज सैक्टर-33, नोएडा), श्री ओम सपरा

–: गरिमामयी उपस्थिति :–

श्री यशोवीर आर्य, रामलुभाया महाजन, मंगलसिंह आर्य, डॉ. आर.के. आर्य, रजनी गर्ग, विनोद गुप्ता, राकेश आर्य, राजेश मेहन्दीरत्ता, मधु सिंह, ओमप्रकाश शास्त्री, वीरेन्द्र महाजन, राजेश सपरा, विजेन्द्र सिंह आर्य, ओमप्रकाश पांडेय, कृष्ण कुमार यादव, देवेन्द्र आर्य बन्धु, सुरेश आर्य, वेद प्रकाश आर्य, महेश शर्मा, अजय चौधरी, गोपाल आर्य, राधा भारद्वाज, हरबंस लाल शर्मा, अशोक गुप्ता, सुनीता रसोत्रा, पूजा सलूजा, ममता चौहान, कै. अशोक गुलाटी, रमेश छाबड़ा, आलोक कुमार, आदर्श आहुजा, सुशील बाली

ऋषि लंगर:– दोपहर 1.00 बजे, प्रबन्धक : अरूण आर्य, विवेक अग्निहोत्री, गौरव झा

दर्शनाभिलाषी

अनिल आर्य	प्रि. रेणु सिंह	महेन्द्र भाई	धर्मपाल आर्य	प्रवीन आर्य
राष्ट्रीय अध्यक्ष	स्वागताध्यक्ष	राष्ट्रीय महामंत्री	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	मीडिया प्रभारी
9810117464		9013137070	9871581398	9911404423

दुर्गेश आर्य	रामकुमार सिंह आर्य	देवेन्द्र भगत	सुरेश आर्य	सौरभ गुप्ता
उपाध्यक्ष	उपाध्यक्ष	राष्ट्रीय मंत्री	राष्ट्रीय मंत्री	राष्ट्रीय संगठन मंत्री

स्वागत समिति

मोहित कपूर, यज्ञवीर चौहान, संतोष शास्त्री, वीरेश आर्य, ऋतम आर्य, प्रकाशवीर शास्त्री, देवेन्द्र गुप्ता, रोहित सिंह

॥ओ३म्॥ स्थापित 3 जून1978

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के
48वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में
डॉ. अमिता चौहान व डॉ. अशोक कु. चौहान के सानिध्य में
विशाल आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर

भव्य समापन समारोह

शनिवार, 6 जून 2026, प्रातः 11 बजे से 1.30 बजे तक
स्थान : ऐमिटी इन्टरनेशनल स्कूल, सैक्टर-44, नोएडा
(निकट मैट्रो स्टेशन बोटोनिकल गार्डन)

कार्यक्रम

मुख्य अतिथि: डॉ. महेश शर्मा (सांसद व पूर्व केन्द्रीय मंत्री)
अध्यक्षता: डॉ. अशोक कुमार चौहान जी (संस्थापक अध्यक्ष, ऐमिटी शिक्षण संस्थान)
विशिष्ट अतिथि: श्री आनन्द चौहान, ठाकुर विक्रम सिंह जी, श्री अरूण बंसल जी

विशिष्ट अतिथि :
श्री अजय चौहान (प्रधान, आर्य समाज डिफेंस कालोनी नई दिल्ली)
डॉ. डी.के. गर्ग (चेयरमेन ईशांन इन्सटीटयूट), श्रीमती नीता-अशोक जेठी

विशेष आकर्षण:
आर्य युवको द्वारा भव्य व्यायाम प्रदर्शन व परेड

–: गरिमामयी उपस्थिति :–

वेद प्रकाश आर्य, आनन्द प्रकाश आर्य (हापुड़), अनुपम आर्य, डॉ. गजराज सिंह आर्य, विमला ग्रोवर, संजय आर्य, देवेन्द्र नागर, कुसुम भंडारी, वीरेन्द्र आहुजा संजय खरबंदा, राकेश खुल्लर, जीवन लाल आर्य, प्रवीन तायल (बृज एंड क.), अविनाश बंसल (अभिनन्दन वाटिका), चन्द्रमोहन कपूर, विजय कपूर, प्रि.अंजू महरोत्रा, जितेन्द्र डावर, अर्चना पुष्पकरना, आर्य रविदेव गुप्त, राजेन्द्र वर्मा, अरूण बहल, सहदेव नागिया, सुशील आर्य, नेत्रपाल आर्य, भोपाल सिंह आर्य आदर्श सलूजा, अनिल अरोड़ा, संतोष वधवा, देवमित्र आर्य, डिम्पल भंडारी, स्वदेश शर्मा, रामफल खर्ब, देवदत आर्य, अमरसिंह सहरावत, नरेन्द्र आर्य सुमन डालेश त्यागी, अमरनाथ बत्रा, के.एल. राणा, संजय सपरा, सुरेश शास्त्री, रमेश गाडी, शोभा सेतिया, राकेश चोपड़ा, अतुल सहगल, विद्योतमा झा, सुनीता बुग्गा, डॉ. कर्नल विपिन खेड़ा, आर.पी. सूरी, यशपाल आर्य, प्रेमलता सरीन, किशन लाल, राजकुमारी शर्मा, प्रेम सचदेवा, ममता शर्मा, राजरानी अग्रवाल

ऋषि लंगर:– दोपहर 1.30 बजे, प्रबन्धक : अरूण आर्य, विवेक अग्निहोत्री, गौरव झा

जहां नहीं होता कभी विश्राम, आर्य युवक परिषद् उसका नाम
केन्द्रीय कार्यालय: आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007
Live Telecast on Youtube channel "aryayuvakparishad"
Email- aryayouthn@gmail.com, dkbhagat@gmail.com

करनाल में आर्य युवा शिविर का शुभारंभ

26 मई 2026, केंद्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा आर्य केन्द्रीय सभा के तत्वावधान में डी.ए.वी पुलिस पब्लिक स्कूल पुलिस लाइन कैथल रोड के सहयोग से लगाए जा रहे पांच दिवसीय आर्य युवती चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास आवासीय प्रशिक्षण शिविर का उद्घाटन यज्ञ एवं ध्वजारोहण के साथ हुआ। पंडित धर्म प्रकाश एवं बहन शशि आर्या के ब्रह्मतत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर ध्वजारोहण कर समारोह का शुभारम्भ प्राचार्य अरुण वर्मा द्वारा किया गया। उन्होंने ने कहा कि इन शिविरों के माध्यम से युवाओं में शक्ति का संचार और उनके चरित्र का निर्माण कराया जाता है। आज की युवा पीढ़ी को सही दिशा और संस्कार देने की आवश्यकता है और इनको सही रास्ता दिखाना हम सब का कर्तव्य है। परिषद् यह कार्य बहुत अच्छे तरीके से कर रही है। उन्होंने कहा कि संस्कारित युवा पीढ़ी ही राष्ट्र का भविष्य है। आचार्य पवन ने शिवरार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि शिविर में जो कुछ सिखाया जा रहा है बच्चे उन्हें अपने जीवन धारण करे तभी वो आगे बढ़ सकते हैं। **(शेष पृष्ठ 4 पर)**

वैदिक धर्म दुःखों से रक्षार्थ सत्य को धारण करने की प्रेरणा करता है

— मनमोहन कुमार आर्य

मनुष्य का जो ज्ञान होता है वह सत्य व असत्य दो कोटि का होता है। मनुष्य के कर्म भी दो कोटि यथा सत्य व असत्य स्वरूप वाले हाते हैं। अनेक स्थितियों में मनुष्य को सत्य को अपनाने से क्षणिक व सामयिक हानि होती दीखती है और असत्य का आचरण करने से लाभ होता दीखता है। बहुत से मनुष्य अपने लाभ के लिये सत्य को छोड़ असत्य में प्रवृत्त हो जाते हैं। ऐसा करना वैदिक धर्म की मान्यताओं एवं सिद्धान्तों की दृष्टि से उचित नहीं होता। इसका कारण यह है कि परमात्मा सत्य में स्थिति हैं। वह सत्य– चित्त–आनन्दस्वरूप हैं। परमात्मा असत्य से युक्त कोई काम नहीं करते और न चाहते हैं कि कोई मनुष्य असत्य का आचरण, व्यवहार व कर्मों को करे। सत्य व्यवहार करने वाले मनुष्य सत्य के आचरण के परिणामस्वरूप भविष्य में ईश्वर से सुख पाते हैं और असत्य का आचरण करने वाले दुःख पाते हैं। यह वैदिक सत्य सिद्धान्त है। इसकी अनेक प्रमाणों एवं घटनाओं से पुष्टि होती है। अतः मनुष्यों को सत्य का ही आचरण करना चाहिये। जो मनुष्य अपनी अविद्या, स्वार्थ वा प्रयोजन की सिद्धि, हठ व दुराग्रह आदि से सत्य को छोड़ असत्य को अपनाते हैं वा अपनाये हुए हैं, उन मनुष्यों को परमात्मा की व्यवस्था से भावी जन्म व परजन्मों में सुख के स्थान पर दुःख मिलता है। मनुष्य को असत्य व्यवहार तथा अशुभ करने से तत्काल कुछ लाभ होता दीखता है, अतः अविवेकी व अज्ञान से युक्त मनुष्य ऐसे कर्मों को करते हैं। इससे उन्हें इष्ट लाभ भी प्राप्त हो जाता है परन्तु इस कर्म का जब परमात्मा से फल प्राप्त होता है तो उसे अनेक प्रकार के दुःख भोगने पड़ते हैं। इस कारण से किसी भी मनुष्य को जीवन में असत्य विचार, असत्य कर्मों में विश्वास, कर्म व निर्णय नहीं करने चाहियें अन्यथा जन्म व जन्मान्तरों में असत्य व अशुभ कर्मों का फल दुःखों के रूप में भोगना होगा। वैदिक सिद्धान्त कहता है कि **'अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभं'** अर्थात् मनुष्य को अपने किये हुए शुभ व अशुभ कर्म के फलों का निश्चय ही भोग करना होता है। इस सत्य सिद्धान्त को जानकर मनुष्य को असत्य का व्यवहार कदापि नहीं करना चाहिये।

ऋषि दयानन्द जी वेदों के मर्मज्ञ विद्वान व ऋषि थे। उन्होंने वेद प्रचार हेतु स्थापित संगठन आर्यसमाज के नियम बनाये जिसमें चौथे नियम में विधान किया कि 'मनुष्य को सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।' सत्य पर बल देते हुए उन्होंने पांचवे नियम में कहा है कि मनुष्य को अपने सभी काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य का विचार करके करने चाहिये। उसे सत्य से युक्त कार्यों को करना चाहिये और असत्य से युक्त कार्यों को नहीं करना चाहिये। आर्यसमाज का एक अन्य महत्वपूर्ण नियम यह भी है कि मनुष्य को अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये। सत्य का आचरण करने से ही देश व समाज में अविद्या का नाश हो सकता है तथा विद्या की वृद्धि होती है। असत्य सदैव अविद्या से युक्त तथा विद्या से पृथक रहता है। विद्या से ही मनुष्य की उन्नति व उत्कर्ष होता है। अविद्या से मनुष्य पतन में गिरता है। सत्य को अपना कर तथा असत्य को छोड़ने से ही देश व समाज में सुख, शान्ति व उन्नति हो सकती है। ऐसा होने पर भी मनुष्य व बहुत से ज्ञानी व विद्वान भी असत्य आचरण करना छोड़ते नहीं है। अनेक ज्ञानी व विद्वानों का सत्य आचरण की उपेक्षा करना आश्चर्य की बात है। यदि संसार में सभी लोग सत्य के ग्रहण करने में दृण निश्चय हो जायें तो पूरे विश्व में धार्मिक व सामाजिक एकता स्थापित हो सकती है। एकता न होने का कारण असत्य का व्यवहार तथा अविद्या ही है। इसी कारण ईश्वर के साक्षातकर्ता व ईश्वर के साक्षातदर्शी ऋषि दयानन्द जी ने सत्य व विद्या के महत्व को आर्यसमाज के नियमों में रेखांकित किया है।

चार वेद ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद परमात्मा के दिये हुए ज्ञान व विद्या के पुस्तक हैं। यह ज्ञान सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, सत्य–चित्त–आनन्दस्वरूप परमात्मा ने सृष्टि के आरम्भ में अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा को दिया था। इस ज्ञान को सर्वान्तर्यामी परमेश्वर ने इन ऋषियों की आत्मा में अन्तःप्रेरणा कर स्थिर किया था। परमात्मा ने ही इन ऋषियों को वेदों की भाषा के ज्ञान सहित वेदों के मन्त्रों के अर्थ भी बताये थे। इनके द्वारा ब्रह्माजी को ज्ञान देने सहित वेद अध्ययन अध्यापन की परम्परा सभी मनुष्यों में आरम्भ हुई थी। महाभारत से पूर्व विश्व के सभी लोग एकमात्र वेदमत को ही मानते व इसका ही आचरण करते थे। इसका एक कारण महाभारत से पूर्व देश देशान्तर में ऋषि परम्परा का प्रचलित होना था। इस वैदिक काल में संसार में धर्म विषयक अविद्या पर नियंत्रण था। सर्वत्र विद्या व वेदों का प्रकाश हमारे ऋषि व उनके शिष्य करते थे। वेदों का अध्ययन करने पर वेद सब सत्य विद्याओं से युक्त ग्रन्थ सिद्ध होते हैं। वेदों की सभी मान्यतायें सत्य पर आधारित एवं सत्य सिद्धान्तों से पुष्ट हैं। ऋषि दयानन्द ने वेद व वैदिक मान्यताओं की सत्यता को सिद्ध करने के लिये ही वेद प्रचार किया और इसको स्थायीत्व प्रदान करने के लिये उन्होंने सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, ऋग्वेद आंशिक तथा यजुर्वेद सम्पूर्ण वेदभाष्य, संस्कारविधि, आर्याभिविनय, पंचमहायज्ञविधि, व्यवहारभानु, गोकरुणानिधि आदि ग्रन्थों का प्रणयन किया। इन ग्रन्थों में सर्वत्र सत्य ही विद्यमान है जिनका अध्ययन कर कोई भी मनुष्य प्रायः सर्वांश में सत्य से परिचित होकर सत्य आचरण व व्यवहार में प्रवृत्त हो सकता है। ऐसा करके ही आर्यसमाज को स्वामी श्रद्धानन्द, पं. लेखराम, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, महात्मा हंसराज, पं. चमूपति तथा पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय आदि सत्याचरण करने वाले अनेक महानपुरुष व महात्मा प्राप्त हुए थे। ऋषि दयानन्द और इन महापुरुषों के जीवन की घटनाओं का अध्ययन करने पर इनका जीवन सत्याचरण से युक्त सिद्ध होता है और इनसे पाठकों को सत्याचरण करने की प्रेरणा मिलती है। सभी को ऋषि दयानन्द का जीवन चरित्र पढ़कर सत्याचरण की शिक्षा लेनी चाहिये व उनके अनुरूप सत्य का आचरण अपने अपने जीवन में करना चाहिये।

वैदिक धर्म में मनुष्य को अपने प्रत्येक कर्म को सत्य पर आधारित करने की प्रेरणा मिलती है। उसे कहा जाता है कि वह मन, वचन व कर्म से सत्य का आचरण व पालन करे। सत्याचरण ही धर्म का पर्याय है। जहां सत्य का आचरण नहीं होता वहां धर्म नहीं होता। सत्य में शाकाहार का सेवन तथा मांसाहार व तामसिक भोजन का त्याग भी जुड़ा हुआ है। शाकाहार सत्य से युक्त आचरण है और मांसाहार असत्य से युक्त एवं निन्दित कार्य होता है। यह भी उल्लेखनीय है कि सत्य के सर्वाधिक महत्व के कारण ही ऋषि दयानन्द ने वैदिक मान्यताओं पर लिखे अपने ग्रन्थ का नाम सत्यार्थप्रकाश रखा। उन्होंने सत्य के निर्णयार्थ वेद की प्रायः सभी प्रमुख मान्यताओं को सत्यार्थप्रकाश के आरम्भ के 10 समुल्लासों में प्रस्तुत कर इसके बाद उत्तरार्ध के 4 समुल्लासों में सभी मत–मतान्तरों के सत्यासत्य की परीक्षा व समीक्षा की। उन्होंने ऐसा करते हुए पूर्णतः निष्पक्ष होकर सभी मतों में असत्य एवं अविद्यायुक्त मान्यताओं का दिग्दर्शन भी कराया है। अविद्या से सम्पृक्त कोई भी मत व सिद्धान्त विष से युक्त भोजन के समान त्याज्य होता है। विवेक व ज्ञान से युक्त मनुष्य ऐसा ही आचरण करते हैं और अतीत में भी प्रायः सभी मतों के अनेक विद्वानों ने सत्य को अपनाते हुए वैदिक धर्म को स्वीकार किया है। ऐसा करने से मनुष्य सत्य धर्म का पालन करने वाले बनते हैं और धर्मपूर्वक अर्थ का संचय एवं अपनी मर्यादित कामनाओं को सिद्ध करते हुए वह मृत्यु के पश्चात मोक्ष को प्राप्त होते है। संसार में जो मनुष्य अपने जीवन में सत्य का सम्पूर्णता से आचरण नहीं करते उनके दुःखों का कभी अन्त नहीं होता है। यदि हम चाहते हैं कि हमें कभी किसी प्रकार का दुःख व कष्ट न हो, तो हमें सत्य का आचरण करते हुए वेद के सत्यस्वरूप को जानकर उसी के अनुरूप व्यवहार करना होगा। वैदिक धर्म असत्य व मिथ्या मान्यताओं, पाखण्ड, आडम्बरों, अविद्या व अन्धविश्वासों से सर्वथा मुक्त है, उसे सभी मनुष्यों को अपनाना होगा। इस मार्ग पर चलकर ही धर्म मार्ग के पथिक को धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष प्राप्त होंगे। सन्ध्या में समर्पण मन्त्र में कहा जाता है **'हे ईश्वर दयानिधे!** आपकी कृपा से जप और उपासना आदि कर्मों को करके हम धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि को शीघ्र प्राप्त होवें।' धर्म और उपासना का सत्य से निहित तथा असत्य से सर्वथा पृथक होना अत्यावश्यक एवं अपरिहार्य है। जिन मनुष्यों की उपासना में सत्य की न्यूनता तथा असत्य का समावेश होता है वह कभी दुःखों से सर्वथा मुक्त व मोक्ष को प्राप्त नहीं हो सकते। अतः मनुष्य को दुःखों से मुक्त होने, जीवन की सफलता व सुखों की उपलब्धि के लिये सत्य को जानकर सत्य का ही व्यवहार करना चाहिये और सत्यपालन के लिए कष्ट उठाने में तत्पर रहना चाहिये क्योंकि सत्य पालन का अन्तिम परिणाम सुख व आनन्द की प्राप्ति होता है।

वैदिक धर्म सत्य ग्रहण कराने तथा असत्य छुड़ाने का पर्याय सत्य मत व धर्म है। इसके लिये हमें ऋषि दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश आदि सभी ग्रन्थों व वेदभाष्य का अध्ययन कर उसके अनुकूल आचरण व व्यवहार करना चाहिये। ऐसा करके ही हम मनुष्य होने की अपनी सत्ता को सार्थकता प्रदान कर सकते हैं। मनुष्य को यह भी ध्यान रखना चाहिये अन्तिम विजय सत्य की ही होती है। इसलिए सत्य से विलग कदापि नहीं होना चाहिये।

–196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, फोनः09412985121

वक्त का पहिया

मैं तो गुजर जाऊंगा
वक्त का पहिया हूँ मैं कहाँ रुक पाऊंगा?

ये तो तुझे देखना है, कि समय का सदुपयोग,
तूने कैसे करना है? वरना मैं चला जाऊंगा
वक्त का पहिया हूँ मैं कहाँ रुक पाऊंगा?

ये तो केवल, तेरे हाथो में है कि तुने मुझसे क्या–कुछ लेना है?
अगर सही में लेना है तो मैं तेरा हो जाऊंगा।
अगर लेने से पहले मैं दूर चला गया
तो वापस कभी ना आऊंगा।
वक्त का पहिया हूँ मैं कहाँ रुक पाऊंगा?

जो लेना है, अभी तू ले ले, जो करना है, बस अभी तू कर ले।
कल की ना मैं, सुन पाऊंगा। कल किसने देखा है, दोस्त?
मुझे पता नहीं, मैं आऊंगा या किसी और का हो जाऊंगा।
वक्त का पहिया हूँ मैं कहाँ रुक पाऊंगा?

फिर चाहे वो अपना हो या वो हो पराया,
फिर चाहे वो रंक हो या राजा हो, भाया।
मैं सब के लिए, एक सा हू,
किसी को अलग से कुछ नहीं दे पाऊंगा।
वक्त का पहिया हूँ मैं कहाँ रुक पाऊंगा?

हजारों किताबें, मुझ पर छपी है हर शख्सियत, मेरा जिक्र करती है।
क्या तूने कुछ नहीं सुना है मेरे बारे में
अगर नहीं तो तेरा कुछ नहीं कर पाऊंगा।
वक्त का पहिया हूँ मैं कहाँ रुक पाऊंगा?

मैंने सुना है कल पर बहुत डालता है तू
लगता है मेरी तो क्या किसी की नहीं सुनता है तू
तेरे लिए, मैं बस, इतना कह पाऊंगा
एक नई घड़ी, केवल तेरे लिए बनाऊंगा।
उसमें, तेरा समय आने के बाद, तेरे आगे खुद खड़ा हो जाऊंगा।
तब मैं तुझको, वो बीते पल, सब याद दिलाऊंगा।
जो ना रोया, तू मन ही मन मैं हार मान जाऊंगा।
वक्त का पहिया हूँ मैं कहाँ रुक पाऊंगा?

– प्रदीप अरोड़ा

सत्यपाल गांधी का अभिनन्दन

आर्य समाज अशोक विहार फेज 2 दिल्ली के प्रधान श्री सत्य पाल गांधी के 98वे जन्मदिन पर अभिनंदन करते अनिल आर्य ओम सपरा सतीश शास्त्री आदि।

जहां होता है भरपूर काम और प्रभु का गुणगान आर्य युवक परिषद् है उसका नाम
युवा उद्घोष के 42 वर्ष पूरे होने पर सबको बधाई।

राष्ट्रवाद पर स्वामी दयानन्द का चिंतन

– डॉ. विवेक आर्य

स्वामी दयानन्द के राष्ट्रवादी चिंतन से हम इस लेख के माध्यम से अवगत करवाएंगे। अंग्रेजी राज में भारतीयों का स्वाभिमान लुप्त हो गया था। स्वदेशवासी स्वदेशवासी पर अत्याचार करने पर उतारू था। स्वामी दयानन्द ने सर्वप्रथम देशवासियों को मनुष्य की बनने की प्रेरणा दी।

स्वामी जी सत्यार्थ प्रकाश में मनुष्य की परिभाषा करते हुए लिखते है–मनुष्य उसी को कहना कि मनन–शील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख–दुःख और हानि लाभ को समझे, अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं किन्तु अपने सर्व सामर्थ्य से धर्मात्माओं की चाहे वे महा अनाथ, निर्बल और गुणरहित क्यों न हो। उनकी रक्षा, उन्नति, प्रिय आचरण; और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती सनाथ महाबलवान भी हो तथापि उसका नाश, अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करे। इस काम में चाहे उसको कितना ही दारुण दुःख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी चले जावें परंतु इस मनुष्य रूपी धर्म से पृथक कभी न होवे। स्वामी दयानन्द ने स्वदेशीय राज्य सर्वोपरि और उत्तम बताया। उन्होंने लिखा–अब अभागोदय से और आर्यों के आलस्य, प्रमाद, परस्पर के विरोध से अन्य देशों के राज्य करने की तो कथा ही क्या कहनी किन्तु आर्यावर्त में भी आर्यों का अखंड, स्वतंत्र, स्वाधीन, निर्भय भारत इस समय नहीं है।जो कुछ है सो कुछ भी विदेशियों के पादाक्रांत हो रहा है। कुछ थोड़े राज्य स्वतंत्र हैं। दुर्दिन जब आता है तब देशवासियों को अनेक प्रकार से दुःख भोगने पड़ते हैं। कोई कितना ही करे किन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है। विदेशियों का राज्य कभी भी पूर्ण सुखदायक नहीं है। स्वामी जी लिखते है कि मत–मतान्तर के आग्रह रहित, अपने और पराये का पक्षपात शुन्य, प्रजा पर पिता–माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं हैं। विदेशियों के आर्यावर्त में राज्य होने का कारण आपस की फूट, मतभेद, ब्रह्मचर्य का सेवन न करना, विद्या न पढ़ना–पढ़ाना, बाल्यावस्था में अस्वयंवर विवाह, विषयासक्ति कुलक्षण, वेद–विद्या का कुप्रचार आदि कुकर्म है।

स्वामी जी आगे लिखते है कि जब आपस में भाई भाई लड़ते है तभी तीसरा विदेशी आकर पंच बन बैठता है। जब से विदेशी मांसाहारी इस देश में आके गौ आदि पशुओं के मारने वाले मद्यपानी राज्याधिकारी हुए हैं। तब से आर्यों के दुःख की बढ़ती होती जाती हैं। आपस की फूट से कौरव पाण्डव और यादव का सत्यानाश हो गया। परन्तु अब तक भी वही रोग पीछे लगा है। न जाने यह भयंकर राक्षस कभी छूटेगा या आर्यों को सब सुखों से छुड़ा कर दुःख सागर में डुबा मारेगा? (सत्यार्थप्रकाश) पारस मणि पत्थर सुना जाता है, वह बात झूठी है। परन्तु आर्यावर्त्त देश ही सच्चा पारस मणि है कि जिसको लोह रूपी दरिद्र विदेशी छूते के साथ ही सुवर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं। (सत्यार्थप्रकाश)। जब लोग वर्तमान और भविष्यत में उन्नतशील नहीं होते तब लोग आर्यावर्त्त और अन्य देशस्य मनुष्यों की बुद्धि नहीं होती। जब बुद्धि के कारण वेदादि सत्य शास्त्रों का पठनपाठन, ब्रह्मचर्य्यादि आश्रमों के यथावत् अनुष्ठान, सत्योपदेश होते हैं तभी देशोन्नति होती है। (सत्यार्थप्रकाश समुल्लास ७)। आर्यों के राज्य के लाभों को गिनाते हुए स्वामी जी सत्यार्थ प्रकाश में लिखते है कि–एक गाय के शरीर से दूध, घी, बैल, गाय उत्पन्न होते से एक पीढ़ी में चार लाख पचहत्तर हज़ार छः सौ मनुष्यों को सुख पहुँचता है। वैसे पशुओं को न मारें, न मारने दे। देखो! जब आर्यों का राज्य था तब ये महोपकारक गाय आदि पशु नहीं मारे जाते थे।तभी आर्यवर्त अन्य भूगोल देशों में मनुष्य आदि प्राणी बड़े आनंद में वर्तते थे, क्योंकि दूध, घी, बैल आदि पशुओं की बहुताई से अन्न, रस पुष्कल प्राप्त होते थे। स्वामी जी भारतीयों को यूरोपियन का स्वदेश प्रेम सिखाते हुए लिखते है–देखो यूरोपियन अपने देश के बने हुए जूते को कचहरी और कार्यालय में जाने देते हैं इस देश के जूते नहीं। इतने ही में समझ लो कि अपने देश के बने जूतों की भी जितनी मान प्रतिष्ठा करते हैं, उतनी भी अन्य देशस्थ मनुष्यों की नहीं करते। देखो, सौ वर्ष से कुछ ऊपर इस देश में आये यूरोपीयनों को हुए, और आज तक ये लोग मोटे कपड़े आदि पहनते हैं। जैसा कि अपने स्वदेश में पहनते थे,परंतु उन्होंने अपना चाल चलन नहीं छोड़ा। और तुम में से बहुत लोगों ने उनका अनुसरण कर लिया। इसी से तुम निर्बुद्धि और वे बुद्धिमान ठहरते हैं। स्वामी जी निष्पक्ष होने का विचार प्रकट करते हुए सत्यार्थ प्रकाश में लिखते है–यद्यपि मैं आर्यावर्त देश में उत्पन्न हुआ और बसता हूं तथापि जैसे इसके मत–मतान्तरों की झूठी बातों का पक्षपात किये बिना यथातथ्य प्रकाश करता हूं। वैसा ही बर्ताव दूसरे देश के मतवालों के साथ करता हूं। मेरा मनुष्यों की उन्नति का व्यवहार जैसा स्वदेशियों के साथ है वैसा ही विदेशियों के है।

आर्याभिविनय में स्वामी दयानंद स्पष्ट रूप से लिखते है–अन्य देशवासी राजा हमारे देश में कभी न हो तथा हम कभी पराधीन न हो। –हे कृपासिंधु भगवन! हम पर सहायता करो जिससे सुनीति युक्त होके हमारा स्वराज्य अत्यंत बढ़े। स्वामी दयानन्द राजा के उच्च आचरण पर जोर देते हुए सत्यार्थ प्रकाश में लिखते है–जैसा राजा होता है वैसी ही उसकी प्रजा होती है इसलिए राजा और राजपुरुषों को अति उचित है कि कभी दुष्टाचार न करें किन्तु सब दिन धर्म न्याय से बर्तकर सबके सुधार के दृष्टा बने। प्रणव मुखर्जी जी अनेकता में एकता की और विविधता में सुंदरता की बात कर रहे थे। स्वामी दयानन्द का चिंतन उसके बिलकुल विपरीत है। स्वामी जी 1877 में एकता परिषद में प्रस्ताव में कहते है–हम भारतवासी सब परस्पर एकमत हो कर एक ही रीती से देश का सुधार करें तो आशा है भारत देश सुधर जायेगा। किन्तु कतिपय मौलिक मंतव्य में मतभेद होने के कारण सब एकता सूत्र में आबद्ध नहीं हो

(शेष पृष्ठ 4 पर)

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा 2020 से 782वां वेबिनार सम्पन्न

'जाग उठा है देश का सोया अभिमान' विषय पर गोष्ठी सम्पन्न

भारत राष्ट्रों उत्थान की और अग्रसर –आर्य रविदेव गुप्ता

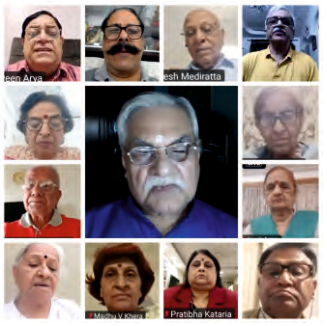

सोमवार 18 मई 2026, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में जाग उठा है देश का सोया अभिमान विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया।यह कोरोना काल से 781 वाँ वेबीनार था। वैदिक प्रवक्ता आर्य रविदेव गुप्त ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी जी के आने के बाद से राष्ट्रीय स्वाभिमान जागृत हुआ है। श्रीराम मंदिर विवाद, तीन तलाक,धारा 370 और अब भोजशाला आदि असम्भव लगनेवाले मुद्दे हल हुए हैं।अब तो नक्सलवाद भी समाप्त होने को हैंस 2014 के बाद से हिन्दू स्वाभिमान जागृत हुआ है लेकिन हिंदुओं को केवल पुलिस के भरोसे नहीं रहना अपितु स्वयं को भी आत्मरक्षार्थ सक्षम बनाना है। मुख्य अतिथि ओम सपरा ने कहा कि काम तो हुए है लेकिन अभी बहुत कार्य बाकी है जैसे गौ हत्या बंदी आदि मुद्दों पर कार्य करना शेष है।अध्यक्ष राजेश मेहंदीरत्ता ने भी हुए कार्यो की सराहना की,परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन करते हुए कहा कि सितारों से आगे जहां और भी हैं। प्रदेश अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया। गायिका कौशल्या अरोड़ा, जनक अरोड़ा,प्रवीना ठक्कर, कमला हंस, रविन्द्र गुप्ता,प्रतिभा खुराना,सुधीर बंसल आदि ने मधुर भजन सुनाए।

सुरेश आर्य गाजियाबाद व डॉ. महेन्द्र नागपाल का अभिनंदन

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के जिला गाजियाबाद के महामंत्री सुरेश आर्य के गृह प्रवेश के अवसर पर उनका अभिनंदन करते अनिल आर्य, महेन्द्र भाई यज्ञ वीर चौहान, सौरभ गुप्ता, के के यादव। द्वितीय चित्र में आर्य समाज अशोक विहार फेज 1,दिल्ली के कार्यक्रम में पूर्व विधायक डॉ महेन्द्र नागपाल, जीवन लाल आर्य, अनिल आर्य, प्रेम सचदेवा, कुंदनलाल आदि।

(पृष्ठ 3 का शेष)

सके। सत्यार्थप्रकाश उत्तरार्द्ध की अनुभूमिका में स्वामी जी लिखते है कि–जब तक इस मनुष्य जाति में परस्पर मिथ्यामतान्तर का विरुद्ध वाद न छूटेगा तब तक अन्योऽन्य को आनन्द न होगा। स्वामी दयानंद से जब पूछा गया कि भारत का पूर्ण हित कब होगा? यहां जातीय उन्नति कब होगी? स्वामी जी उत्तर देते है– एक धर्म, एक भाषा और एक लक्ष्य बनाये बिना भारत का पूर्ण हित और जातीय उन्नति का होना दुष्कर कार्य है। सब उन्नतियों का केंद्र स्थान ऐक्य हैं। श्रीमद्दयानंदप्रकाश में स्वामी जी का विचार इस प्रकार से मिलता है। जहाँ भाषा–भाव और भेष में एकता आ जाय वहां सागर में नदियों की भांति सारे सुख एक एक करके प्रवेश करने लग जाते हैं। मैं चाहता हूं देश के राजे–महाराजे अपने शासन में सुधार और संशोधन करें। अपने राज्यों में धर्म, भाषा और भावों में एकता उत्पन्न कर दें। फिर भारत में आप ही आप सुधार हो जायेगा।

डॉ मुखर्जी के अनुसार अनेकता में एकता में देश की विभिन्न भाषाएँ भी आती हैं। जबकि स्वदेशी भाषा को एकता का सूत्र मानने वाले स्वामी दयानन्द से जब वेदों का अन्य भाषा में अनुवाद रूपी प्रश्न पूछा गया तो स्वामी जी कहते है– अनुवाद तो विदेशियों के लिए हुआ करता है। नागरी के अक्षर थोड़े दिनों में सीखे जा सकते हैं। आर्यभाषा का सीखना कोई कठिन नाम नहीं। फारसी और अरबी के शब्दों को छोड़कर, ब्रह्मावर्त की सभ्य भाषा ही आर्यभाषा है। यह अति कोमल और सुगम है। जो इस देश में उत्पन्न होकर अपनी भाषा को सिखने में कोई भी परिश्रम नहीं करता, उससे और आशा क्या की जा सकती है? उसमें धर्म लग्न है, इसका भी क्या प्रमाण है?आप तो अनुवाद की सम्मति देते है परंतु दयानंद के नेत्र तो वह दिन देखना चाहते हैं, जब कश्मीर से कन्याकुमारी तक और अटक से कटक तक नागरी अक्षरों का ही प्रचार होगा। मैंने आर्यावर्त में भाषा का एक्य संपादन करने के लिये ही अपने सकलग्रन्थ आर्यभाषा में लिखे और सम्पादित किये है। वेदों में स्वदेशी राज्य का सन्देश – मनुष्यों को चाहिए कि पुरुषार्थ करने से पराधीनता छुड़ाके स्वाधीनता को निरंतर स्वीकार करे। – यजुर्वेद १५/५, इस संसार में किसी मनुष्यों को विद्या के प्रकाश का अभ्यास, अपनी स्वतंत्रता और सब प्रकार से अपने कामों की उन्नति को न छोड़ना चाहिए। – यजुर्वेद ५/ ४३, राजपुरुषों को योग्य है कि भोजन, वस्त्र और खाने पीने के पदार्थों से शरीर के बल को उन्नति देवें, किन्तु व्यभिचार आदि दोषों में कभी प्रवृत न होवें। –यजुर्वेद ८/३६, जिस देश में पूर्ण विद्या वाले राजकर्मचारी हों वहां सब की एक मती होकर अत्यंत सुख बढ़े। – यजुर्वेद ३३/६८, राजा प्रजाजनों को चाहिए कि विद्वानों की सभा में जाकर नित्य उपदेश सुनें जिससे सब करने और न करने योग्य विषयों का बोध हो। – ऋग्वेद १/४७/१०, लाला लाजपत राय ने स्वामी दयानंद के राष्ट्रवाद रूपी चिंतन पर गंभीर एवं अति महत्वपूर्ण टिप्पणी करते हुए अपनी पुस्तक आर्य समाज में लिखा है–स्वामी दयानन्द का एक एक शब्द चाहे उसे सत्यार्थ प्रकाश में पढ़िए, चाहे आर्याभिविनय में अवलोकन कीजिये, चाहे वेद भाष्य में देखिये, राजनैतिक स्वाधीनता की अभिलाषा से परिपूर्ण है। स्वामी दयानंद पूर्ण देशभक्त थे और जब कभी इस देश की स्वाधीनता का इतिहास लिखा जायेगा तो स्वामी जी का नाम उन महापुरुषों की प्रथम श्रेणी में अंकित होगा जिन्होंने उन्नीसवीं शताब्दी में इस देश को स्वतंत्र करवाने की नींव डाली। डॉ मुखर्जी जी का यह कहना कि राष्ट्र की आत्मा बहुलवाद और पथनिरपेक्षवाद में बसती है। यह सदियों में विकसित हुई है। डॉ जी का यह कथन वेदों की शिक्षा से मेल नहीं खाता। राष्ट्र की अवधारणा और सभी मनुष्यों से समान रूप से व्यवहार करने का सन्देश ईश्वर द्वारा वेदों के माध्यम से सृष्टि के आरम्भ में ही दे दिया गया था। इसे विकसित करने की नहीं अपितु अपनाने की आवश्यकता हैं। 1947 के पश्चात वेदों पर आधारित और स्वामी दयानन्द द्वारा प्रतिपादित एकता का सन्देश हमारे संविधान में अपनाया जाता तो आज हमारे देश में जितनी भी समस्याएं हैं जैसे भाषावाद, प्रांतवाद, मतवाद, परम्परावाद, जातिवाद, क्षेत्रियवाद आदि का निराकरण कब का हो गया होता। अभी भी समय है। स्वामी दयानन्द के राष्ट्रवाद रूपी चिंतन को अपनाया जाना चाहिए। जिससे भारत देश फिर से संसार में शिरोमणि कहला सके। क्यूंकि मनुष्य जन्म का होना सत्यासत्य के निर्णय करने कराने के लिए है, न कि वादविवाद विरोध करने कराने के लिए।– स्वामी दयानन्द

(पृष्ठ 1 का शेष)

वैदिक वक्ता सुश्री अमर कौर ने कहा की बच्चों की सफलता के लिए उनमें आत्मिक शक्ति और संस्कृति का ज्ञान होना बहुत आवश्यक है। परिषद् के प्रांतीय अध्यक्ष स्वतंत्र कुकरेजा ने बताया कि इस शिविर में विभिन्न स्कूलो के 75 बच्चे भाग ले रहे है। इस अवसर पर शिविर प्रभारी रोशन आर्य, अजय आर्य, आनंद सिंह आर्य, विनय आर्य, गोपाल आर्य, हरेंद्र चौधरी, वेद खुराना, देशपाल ठाकुर, सत्येंद्र मोहन कुमार, रामकुमार आर्य दादूपुर, सुरेश अरोड़ा, बलजीत आर्य, अनिल आर्य कुंजपुरा, आदित्य आर्य, रमेश आर्य, सुधीर आर्य, कमलेश आर्या, प्रिया आर्या,ऋतु आर्या, निशा शर्मा, सविता कौशिक एवं स्कूल के सभी अध्यापक उपस्थित रहें। **– स्वतन्त्र कुकरेजा**

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**, 2199/63,नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 **मो.:** 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक :** दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970